Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

सरस्वतीकण्ठाभरणीय वैदिकी–प्रक्रिया का वैशिष्ट्य

डॉ. संजीवनी आर्या
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
विद्या भवन महिला महाविद्यालय, सिवान (बिहार)

Article Info
Volume 5, Issue 3
Page Number : 171-175

Publication Issue :
May-June-2022

Article History
Accepted : 01 May 2022
Published : 30 May 2022

सारांश – 'षट्सु अङ्गेषु प्रधानं व्याकरणम्' इति। छह वेदांगों में व्याकरण का प्रधान स्थान है। वेदों के अर्थावबोध हेतु व्याकरण की महती आवश्यकता होती है। यद्यपि अनेक संस्कृत व्याकरण ग्रन्थ आचार्यों द्वारा प्रणीत हैं। उनमें पाणिनीय व्याकरण अत्यन्त प्रसिद्ध तथा वेदांग के रूप में स्वीकृत है। पाणिनीय व्याकरण का ही अनुकरण करते हुए आचार्य भोजराज ने 'सरस्वतीकण्ठाभरणम्' नामक एक विशिष्ट व्याकरण ग्रन्थ का प्रणयन किया है। आचार्य भोजराज की यह व्याकरणिक कृति उनको विद्वत् समाज में महान वैयाकरण के रूप में प्रतिष्ठित करती है। सरस्वतीकण्ठाभरण की वैदिकी प्रक्रिया तो अत्यन्त विशिष्ट एवं सुस्पष्ट है। पाणिनीय की तरह ही आचार्य भोज ने इस सरस्वतीकण्ठाभरण में आठ अध्यायों की संरचना की है। पूर्व के सात अध्यायों में लौकिक व्याकरण को स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया है तथा अन्तिम अष्टम अध्याय में वैदिकी प्रक्रिया एवं स्वर प्रक्रिया को सुगमता से निरूपित किया है। त्रिमुनि व्याकरण के साररूप में सम्पूर्ण अध्यायों में सूत्रों की संरचना हुई है। अष्टम अध्याय की वैदिकी प्रक्रिया अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं विशिष्ट है। अनेक प्रकार से भोजराज ने इसको सुगम बनाने का प्रयास किया है तथा एक ही स्थल पर सम्पूर्ण वैदिकी प्रक्रिया को रखकर अध्येताओं के लिए बोधगम्य बनाया है। प्रस्तुत आलेख में वैदिकी प्रक्रिया की अनेक विशिष्टताओं का प्रतिपादन किया गया है।

संकेत शब्द – सरस्वतीकण्ठाभरणम्, वैदिकी प्रक्रिया, व्याकरण, बहुलं छन्दसि, स्वर प्रक्रिया आदि।

संस्कृत वाङ्मय के अनेक अंगों के अनन्य उपासक आचार्य भोजदेव ''सरस्वतीकण्ठाभरण'' नामक ग्रन्थरत्नद्वय की रचना करके मूर्धन्य विद्वत्समाज में लब्धप्रतिष्ठ हुए। उक्त ग्रन्थ ''सरस्वतीकण्ठाभरण'' काव्यशास्त्र (अलंकारशास्त्र) से सम्बद्ध है और दूसरा व्याकरणशास्त्र से सम्बद्ध है। आचार्य भोजदेव ने प्राचीन वैयाकरण विशेषतः पाणिनि मुनि प्रणीत व्याकरणशास्त्र (अष्टाध्यायी) का विशेष परिशीलन करते हुए एक अपूर्व व्याकरण ग्रन्थ (अष्टाध्यायी) का प्रणयन किया, जिसका नाम अन्य–शास्त्र–साधारण सरस्वतीकण्ठाभरण रखा है।

पाणिनि व्याकरण में सूत्र की विशेष व्याख्या करते हुए वार्तिककार कात्यायन एवं भाष्यकार पतंजलि ने अनेक सूत्रवार्तिक एवं भाष्यवार्तिकों का निर्माण किया है। जिसके आधार पर सूत्रों के द्वारा निष्पन्न होने वाले कार्यों में सौविध्य प्राप्त होता है। सूत्रों के उदाहरणों के साथ–साथ अन्य समान–कक्षीय अस्पष्ट उदाहरणों का भी स्वरूप स्पष्ट हो जाता है।

सरस्वतीकण्ठाभरण के रचयिता आचार्य भोजदेव ने अपने व्याकरण को व्यक्तित्रय से सम्बन्धित न कर स्वयं ही पाणिनि कात्यायन एवं पतंजलि त्रिमुनि के रूप में वार्तिकों के स्थान पर सूत्रों का ही प्रणयन किया है और पाणिनि

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

के लम्बे सूत्रों के स्थान पर अधिकांश पाणिनीय सूत्रों का अविकल स्वरूप कतिपय सूत्रों का आंशिक एवं अर्धभाग परिवर्तित करते हुए प्रायः लघु सूत्रों का प्रणयन किया है।

परवर्ती पाणिनीयेतर व्याकरणों में एकमात्र सरस्वतीकण्ठाभरण है जिसमें लौकिक एवं वैदिक शब्दों के सम्बन्ध में सूत्रों का निर्माण कर पाणिनीय व्याकरण की लौकिक एवं वैदिक परम्परा का पूर्णतया निर्वाह किया है। धातुपाठ, गणपाठ उणादिकोश फिट्सूत्र आदि पंचांग अवयवों का समावेश कर नये–नये सूत्रों का प्रणयन किया है, जिससे पाणिनीय व्याकरण में उल्लिखित सूत्रों की अपेक्षा सरस्वतीकण्ठाभरण के सूत्रों की संख्या अधिक है। ऐसे अपूर्व ग्रन्थ के निर्माण में पाणिनीय व्याकरण उपजीव्य के रूप में है क्योंकि इन्होंने बहुत से पाणिनीय सूत्रों को अपने व्याकरण में यथावत् स्थान दिया है। पाणिनीय व्याकरण की वैज्ञानिकता लौकिक वैदिक शब्दों की व्यापकता, सरलता एवं आकर्षकता आदि गुणों के कारण विद्वन्मण्डलों में अत्यधिक ख्याति प्राप्त हुई है, किन्तु एक अपूर्व एवं विस्तृत व्याकरण होते हुए भी भोजदेवकृत सरस्वतीकण्ठाभरण का प्रचार प्रसार उसके अनुपात में नहीं हो पाया। यह व्याकरण का दोष नहीं है अपितु समय का दोष है।

सरस्वतीकण्ठाभरण में कुल आठ अध्याय होने के कारण इसे भी अष्टाध्यायी नाम सम्बोधित किया जा सकता है। इस ग्रन्थ में पाणिनीय व्याकरण की भाँति आरोही क्रम से प्रथम अध्याय के प्रथम पाद में संज्ञा, द्वितीय पाद में परिभाषा तृतीय पाद से लेकर द्वितीय अध्याय के चतुर्थ पाद तक धातुओं से विहित होने वाले सन् प्रत्यय, विकरण प्रत्यय, कृत् प्रत्यय, कृत्यप्रत्ययों का प्रतिपादन किया गया है। तृतीय अध्याय के प्रथम पाद में विभक्ति प्रत्यय अथवा कारक का उल्लेख हुआ है। तृतीय अध्याय के द्वितीय एवं तृतीय पादों में समासों की व्याख्या की गई है। चतुर्थ पाद में स्त्री प्रत्ययान्त शब्दों की व्याख्या की गई है। चतुर्थ अध्याय के प्रथम पाद से लेकर पंचम अध्याय के चतुर्थ पाद पर्यन्त तद्धित प्रत्ययान्त शब्दों का प्रतिपादन हुआ है। छठें अध्याय के प्रथम पाद से लेकर सप्तम अध्याय के चतुर्थ पाद तक पद कार्य (षत्व, णत्व) सन्धि, अलुक्, समास तथा समासाश्रय कार्यों का विवेचन है। अष्टम अध्याय के प्रथम पाद से चतुर्थ पाद तक वैदिकी–प्रक्रिया एवं स्वर–प्रक्रिया का प्रतिपादन है।

पाणिनि ने वैदिक व्याकरण हेतु अष्टाध्यायी में कोई स्वतन्त्र प्रावधान नहीं किया है प्रत्युत सम्पूर्ण अष्टाध्यायी में जहाँ–जहाँ जिस–जिस प्रकरण में उन्हें वैदिक सूत्रों के पठन की आवश्यकता प्रतीत हुई वहाँ उन्होंने छन्दसि, मन्त्रे, ऋचि, यजुषि आदि पदों का प्रयोग कर निर्देश किया है। पाणिनि ने सम्पूर्ण अष्टाध्यायी में लगभग 270 वैदिक सूत्रों का निर्देश किया है, जिनमें से 225 सूत्र सीधे उल्लेख द्वारा या अनुवृत्ति द्वारा वैदिक कार्यों का विधान करते हैं शेष सूत्रों का परोक्षरूपेण वैदिक कार्यों से एवं स्वर से सम्बन्ध है।

भोज ने 'सरस्वतीकण्ठाभरण'' के अष्टम अध्याय के प्रथम दो पादों में वैदिक सूत्रों का निर्देश किया है एवं तृतीय तथा चतुर्थ पाद में स्वर विधायक सूत्रों का निर्देश किया है। जब तक अध्येता अष्टाध्यायी की तरह इन आठों अध्यायों का अध्ययन नहीं करता तब तक वह इस ग्रन्थ का सम्पूर्ण ज्ञाता नहीं हो सकता यह इसकी विशेषता है। अष्टाध्यायी की तरह भले ही अध्ययन अध्यापन में यह ग्रन्थ लोकप्रिय नहीं रहा तथापि इसके आठों अध्याय अक्षुण्णरूपेण प्राप्त होते हैं। यह सौभाग्य की बात है।

वैदिकी प्रक्रिया विषयक भोजदेव की विशेषतायें इस प्रकार हैं–

(१) भोज ने अष्टम अध्याय के प्रथम पाद के प्रथम सूत्र में **'बहुलं छन्दसि'** सूत्र का विधान करके उसकी अनुवृत्ति सम्पूर्ण वैदिक प्रकरण में अनुवृत्त किया है, क्योंकि भोज का वैदिक व्याकरण एक ही स्थान पर संकलित है। लेकिन पाणिनि के वैदिक सूत्र अष्टाध्यायी के आठों अध्यायों में है। जहाँ–जहाँ पाणिनि ने वैदिक सूत्रों का निर्देश किया है वहाँ–वहाँ उन्हें स्पष्ट रूप से निर्देश करना पड़ा है। परिणाम स्वरूप सम्पूर्ण अष्टाध्यायी में पाणिनि ने 11

बार **''बहुलं छन्दसि''**[1] सूत्र का निर्देश किया है। भोज ने सम्पूर्ण वैदिक कार्यों के लिए केवल 1 बार ही **''बहुलं छन्दसि''**[2] सूत्र का निर्देश किया है तथा उसी का अधिकार सम्पूर्ण वैदिकी–प्रक्रिया में अधिकृत है। 'बहुलं छन्दसि' सूत्र के द्वारा ही भोज ने 11 प्रकार के व्यत्ययों का ग्रहण किया– सुप, तिङ्, उपग्रह, लिंग, नर, काल हल्, अच्, स्वर, कर्तृ , यङ्। लेकिन पाणिनि ने **''व्यत्ययो बहुलम्''**[3] सूत्र द्वारा व्यत्ययों का निर्देश किया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भोज द्वारा एकत्र निर्दिष्ट वैदिकी–प्रक्रिया लघुता को धारणा किए हुए पाठकों के लिए सुगमता से अवगम्य है।

(२) भोजदेव के वैदिकी प्रक्रिया की विशेषता यह है कि उनके बहुत से सूत्र वार्तिक सूत्रों के आधार पर रचे गये हैं जिनमें वैदिक कार्यों का ही निदर्शन किया गया है–

1. भोजसूत्र –**''पुनश्चनसौ गती''**(8.1.7)
   पा. अ. वा. सूत्र – **पुनश्चनसौ छन्दसि गतिसंज्ञौ भवतः** (1.4.60)
2. भोजसूत्र –**''क्यच् परेच्छायाम्''**(8.1.9)
   पा. अ. वा. सूत्र – **छन्दसि परेच्छायामिति वक्तव्यम्** (3.1.8)
3. भोजसूत्र –**''दंशेस्नुः**(8.1.39)
   पा. अ. वा. सूत्र – **दंशेश्छन्दस्युपसंख्यानम्** (3.2.139)
4. भोजसूत्र – **''छन्दसोऽक्षराणाम्''**(8.1.137)
   पा. अ. वा. सूत्र – **अक्षरसमूहे छन्दसः स्वार्थं उपसंख्यानम्** (4.4.140)
5. भोजसूत्र – **''विश्वजनादीनां छे तुक्''**(8.2.12)
   पा. अ. वा. सूत्र – **विश्वजनादीनां छन्दसि वा तुगागमो भवतीति वक्तव्यम्** (6.1.76)
6. भोजसूत्र – **''उतो लुग्वा''** (8.2.61)
   पा. अ. वा. सूत्र – **''उतश्च प्रत्ययाच्छन्दो वा वचनम्''** (6.4.106)
7. भोजसूत्र – **''ह्रग्रहोर्हस्य भः''** (8.2.115)
   पा. अ. वा. सूत्र – **''ह्रग्रहोर्भश्छन्दसि हस्येति वक्तव्यम्''** (8.2.35)

(३) भोजदेव ने वैदिकी प्रक्रिया के बहुत से सूत्रों में गणपठित शब्दों का परिगणन किया है जबकि पाणिनि सूत्रों में उल्लेख मात्र करके शेष शब्दों को गण में ही पढा गया है।यथा –

1. **''बह्वंहतिपद्धत्यंचत्यंकतिवंहतिशकटिशक्तिशस्त्रिशारिवारिगत्यहिकपिमुनियष्ट्यादिभ्यो ङीष्''** (8.1.92)

   पा. अ. सूत्र – **''बह्वादिभ्यश्च''** (4.1.45) तथा सूत्रान्तर्गत गणशब्द ।

(४) भोजदेव ने वैदिकी प्रक्रिया में अधिकांश सूत्रों को मूलरुप में ही स्वीकार किया है। यथा–

1. भोजसूत्र – **''कव्यपुरीषपुरीष्येषु ञ्युट्''** (8.1.29)
   पा. सूत्र – (3.2.65)
2. भोजसूत्र – **''जनसनखनक्रमगमो विट्''** (8.1.3)
   पा. सूत्र – (3.2.67)
3. भोजसूत्र – **''नक्षत्राद् घः''** (8.1.138)
   पा. सूत्र – (4.4.141)
4. भोजसूत्र – **''ई च द्विवचने''** (8.2.72)

[1]- अष्टाध्यायी 2.4.39, 2.4.73, 2.4.76, 3.2.88, 5.2.122, 6.1.34, 7.1.8, 7.1.10, 7.1.103, 7.3.97, 7.4.78

[2] - सरस्वतीकण्ठाभरण 8.1.1

[3] अष्टाध्यायी 3.1.85

पा. सूत्र – (7.1.77)

5. भोजसूत्र – **''ऋत इद्धातोः''** (8.2.75)
   पा. सूत्र – (7.1.100)

(५) भोजदेव ने वैदिकी प्रक्रिया में कहीं कहीं पाणिनि के दो या अधिक सूत्रों को एक ही सूत्र के रूप में पढा है। यथा –

1. पा. सूत्र – **''ईदूदेद् द्विवचनं प्रगृह्यम्'' ''शे''** (1.1.11–13)
   भोजसूत्र – **''शे प्रगृह्यम्''** (8.1.2)
2. पा. सूत्र – **''हलः श्नः शानज्झौ'' ''छन्दसि शायजपि''** (3.1.83–84)
   भोजसूत्र – **''हलश्नाशानचोः शायज्वा''** (8.1.22)
3. पा. सूत्र – **''कर्मणि हनः'' ''भूते'' ''ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप्''** (3.2.84–86–87)
   भोजसूत्र – **''भूते हनः क्विप्''** (8.1.35)
4. पा. सूत्र – **''तस्य तात्'' ''तप्तनप्तनथनाश्च''** (7.1.44–45)
   भोजसूत्र – **''तस्य तात्तप्तनप्तनथनाश्च''** (8.1.68)
5. पा. सूत्र – **''थट् चच्छन्दसि'' ''छन्दसि परिपन्थिपरिपरिणौ पर्यवस्थातरि''** (5.2.50–89)
   भोजसूत्र – **''पूरणे थड्वा परिपन्थिपरिपरिणौ पर्यवस्थातरि''** (8.1.148)
6. पा. सूत्र – **''नश्छव्यप्रशान्'' ''उभयथर्क्षु''** (8.3.7–8)
   भोजसूत्र – **''ऋक्षु नश्छव्यम्परे वा''** (8.2.127)

(६) भोजदेव ने वैदिकी प्रक्रिया में कहीं कहीं पाणिनि के एक ही सूत्र को दो सूत्रों के रूप में पढा है। यथा –

1. पा. सूत्र – **''अभ्युत्सादयांप्रजनयांचिकयांरमयामकः पावयांक्रियाद्विदामकन्नितिच्छन्दसि''** (3.1.42)
   भोजसूत्र – **'' अभ्युत्सादयांप्रजनयांचिकयांरमयामकः''** (8.1.12)
   ''पावयांक्रियाद्विदामकन्'' (8.1.13)
2. पा. सूत्र – **''तुमर्थे सेसेनसेऽसेन्क्सेकसेनध्यैअध्यैन्कध्यैकध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ्तवेनः''** (3.4.9)
   भोजसूत्र – **''तुमर्थे''** (8.1.50)
   ''सेसेनसेऽसेन्क्सेकसेनध्यैअध्यैन्कध्यैकध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ्तवेनः'' (8.1.51)
3. पा. सूत्र – **''आपोजुषाणोवृष्णोवर्षिष्ठे अम्बेअम्बालेअम्बिकेपूर्वे''** (6.1.118)
   भोजसूत्र – **''आपोजुषाणोवृष्णोवर्षिष्ठे''** (8.2.22)
   'अम्बेअम्बालेअम्बिकेपूर्वे'' (8.2.23)

(७) भोजदेव ने वैदिकी प्रक्रिया में कुछ सूत्र पाणिनीय सूत्र एवं वार्तिक सूत्रों को मिलाकर रचे हैं। यथा –

1. पा. सूत्र – **''सुप आत्मनः क्यच्''** (3.1.8)
   वार्तिकसूत्र – **''छन्दसि परेच्छायामिति वक्तव्यम्''**
   भोजसूत्र – **''क्यच् परेच्छायाम्''** (8.1.9)
2. पा. सूत्र – **''उदि ग्रहः''** (3.3.35)
   वार्तिकसूत्र – **''छन्दसि निपूर्वादपीष्यते स्रुगुद्यमननिपातनयोः''**
   भोजसूत्र – **''उद्यमननिपातनयोरुन्निभ्यां ग्रहेर्घञ्''** (8.1.42)
3. पा. सूत्र – **''इष्ट्वीनमिति च''** (7.1.48)

वार्तिकसूत्र – **''पीत्वीनमपि इष्यते''**
भोजसूत्र – **''इष्ट्वीनं पीत्वीनमिति च''** (8.2.70)

(७) भोजदेव ने वैदिकी प्रक्रिया में निपातनात्मक सूत्रों का विधान अनेक स्थलों पर किया है। यथा –

''अभ्युत्सादयां'' (8.1.12), **''निष्टर्क्यदेवहूय''** (8.1.24), **''ग्रसितस्कभित''** (8.2.80), **''दाधर्तिदर्धर्ति''** (8.2.102), **''नसत्तनिषत्ता''** (8.2.112) आदि।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भोज द्वारा एकत्र निर्दिष्ट वैदिकी–प्रक्रिया अनेक विशेषताओं से युक्त एवं लघुता को धारणा किए हुए पाठकों के लिए सुगमता से अवगम्य है।

संक्षिप्ताक्षर सूची –

1. पा0 सू0	–	पाणिनीय सूत्र
2. फि0 सू0	–	फिट् सूत्र
3. वा0 प्रा0	–	वाजसनेय प्रातिशाख्य
4. ऋ0 प्रा0	–	ऋक्प्रातिशाख्य
5. गो0 ब्रा0	–	गोपथ ब्राह्मण
6. ऐ0 ब्रा0	–	ऐतरेय ब्राह्मण
7. षड्0 ब्रा0	–	षड्विंश ब्राह्मण
8. ता0 ब्रा0	–	ताण्ड्य ब्राह्मण
9. पा0 शि0	–	पाणिनीय शिक्षा
10. ना0 शि0	–	नारदीय शिक्षा
11. ऋ0	–	ऋग्वेद
12. यजु0	–	यजुर्वेद
13. साम0	–	सामवेद
14. अथर्व0	–	अथर्ववेद
15. स0 क0	–	सरस्वतीकण्ठाभरण
16. अ0 सू0	–	अष्टाध्यायी सूत्रपाठ
17. धा0 पा0	–	धातुपाठ
18. नि0	–	निरुक्तम्